पेंसलवेनिया की विशेष दूत ने किया जीका मुख्यालय का दौरा

शिमला। भारत और यूएई में कॉमनवेल्थ ऑफ पेंसलवेनिया की विशेष दूत कनिका चौधरी ने वीरवार को जीका के पॉटर हिल स्थित मुख्यालय का दौरा किया।

जीका के मुख्य परियोजना अधिकारी के साथ हुई मुलाकात के दौरान उन्होंने बताया कि उनका यह दौरा रणनीति और पारस्परिक सहयोग की संभावनाओं को तलाशने से संबंधित है। एपीससीएफ व मुख्य परियोजना अधिकारी नागेश गुलेरिया ने जीका के फॉरेस्ट्री प्रोजेक्ट के अंतर्गत चल रहीं गतिविधियों की जानकारी दी।

बताया कि आठ सौ करोड़ के इस प्रोजेक्ट को बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, शिमला, किन्नौर और लाहौल-स्पीति के सात वन सर्किल, 18 डिवीजन और 61 रेंज में चलाया जा रहा है। इसके तहत फॉरेस्ट ईकोसिस्टम मैनेजमेंट प्लान व कम्यूनिटी बायोडायवर्सिटी मैनेजमेंट प्लान तैयार किया जा रहा है। ब्यूरो

शिमला, शुक्रवार, 10 सितंबर, 2021

दिव्य हिमाचल

[illegible]

शिमला, शुक्रवार, 10, सितंबर, 2021

दिव्य हिमाचल

प्रदेश में बेहतर काम कर रही जाइका

पेंसिल्वेनिया की राजदूत चौधरी ने किया मुख्यालय का दौरा

दिव्य हिमाचल ब्यूरो – शिमला

भारत और संयुक्त अरब अमीरात में पेंसिल्वेनिया की विशेष राजदूत कनिका चौधरी ने गुरुवार को पॉटरहिल में स्थित जाइका मुख्यालय का दौरा किया। मुख्य परियोजना निदेशक (जेआईसीए वानिकी परियोजना) के साथ आयोजित बैठक में उन्होंने कहा कि वह पेंसिल्वेनिया के राष्ट्रमंडल का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। इसका उद्देश्य पेंसिल्वेनिया और भारत के राष्ट्रमंडल के बीच आपसी और [illegible] आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है। इस बैठक के दौरान [illegible] सीसीएफ-कम-सीपीडी (जाइका) नागेश गुलेरिया ने राज्य में जाइका वानिकी परियोजना की विस्तृत गतिविधियां प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि जाइका प्रोजेक्ट बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, शिमला किन्नौर और लाहुल-स्पीति जिलों में सात वन मंडलों, 18 मंडलों और 61 रेंजों में लागू किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन योजना/सामुदायिक जैव विविधता प्रबंधन योजना सभी हितधारकों को लोकतांत्रिक तरीके से विधिवत रूप से शामिल करके तैयार की जा रही है। श्री गुलेरिया ने बताया कि आजीविका घटक के तहत 382 एसएचजी/ सीआईजी का गठन किया गया है। इनमें से 345 सभी महिला संचालित ग्रुप हैं। इसमें खास बात यह है कि 15 इन्कम जनरेशन मॉडल को 80 व्यावसायिक योजनाओं पर काम कर रहे हैं। मुख्य परियोजना निदेशक ने राज्य के लाहुल-स्पीति और किन्नौर जिलों में प्राकृतिक रूप से उगने वाले सीबकथोर्न (छर्मा) के प्रसार और विभिन्न पर्यावरणीय, सामाजिक-आर्थिक और औषधीय उपयोगों के बारे में राजदूत को जानकारी दी। इसके अलावा यह भी बताया कि सीमांत भूमि पर खेती की जाती है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग, एचपी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अरविंद कुमार भट्ट, डा. आरसी कांग आईएफएस [illegible] जड़ी-बूटी सेल, परियोजना निदेशक जाइका राजेश शर्मा और [illegible] प्रबंधन इकाई के कर्मचारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।